Twitter Thread by ■■■■■■■■■■■ Resurgence ■

■■■■■■■■■■■ Resurgence ■
@punarUtthana108

Ancient Indian Chemists !!
■

■■■■■ ■■■ ■■■ ■■■■ ■■■ ■■■■ ■■■■■■■■ ■■■

■■■■■■■■■-■■■■■■■■ ,■■■■■■■■■■■■, ■■■■■■ ■■■■■, ■■■ ■■■, ■■■■■■■■

■■■■■■■■ - ■■■■■■ ■■■■■■■

■■■■■■■■■■■■ - ■■■■■■■

■■■■■ - ■■ ■■■■■■ ■■■■■■

■■■■■■■■■ - ■■■■■■■■ ■■■■■■■■

■■■■■■- ■■■■■■■■ ■■■■■■■■

1/n

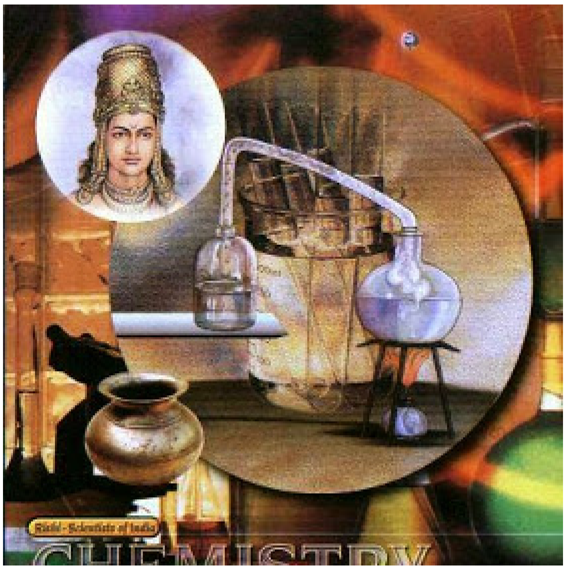

Nagarjuna can be called wizard of Chemistry and Super Metallurgist

[illegible]

[illegible]

2/n

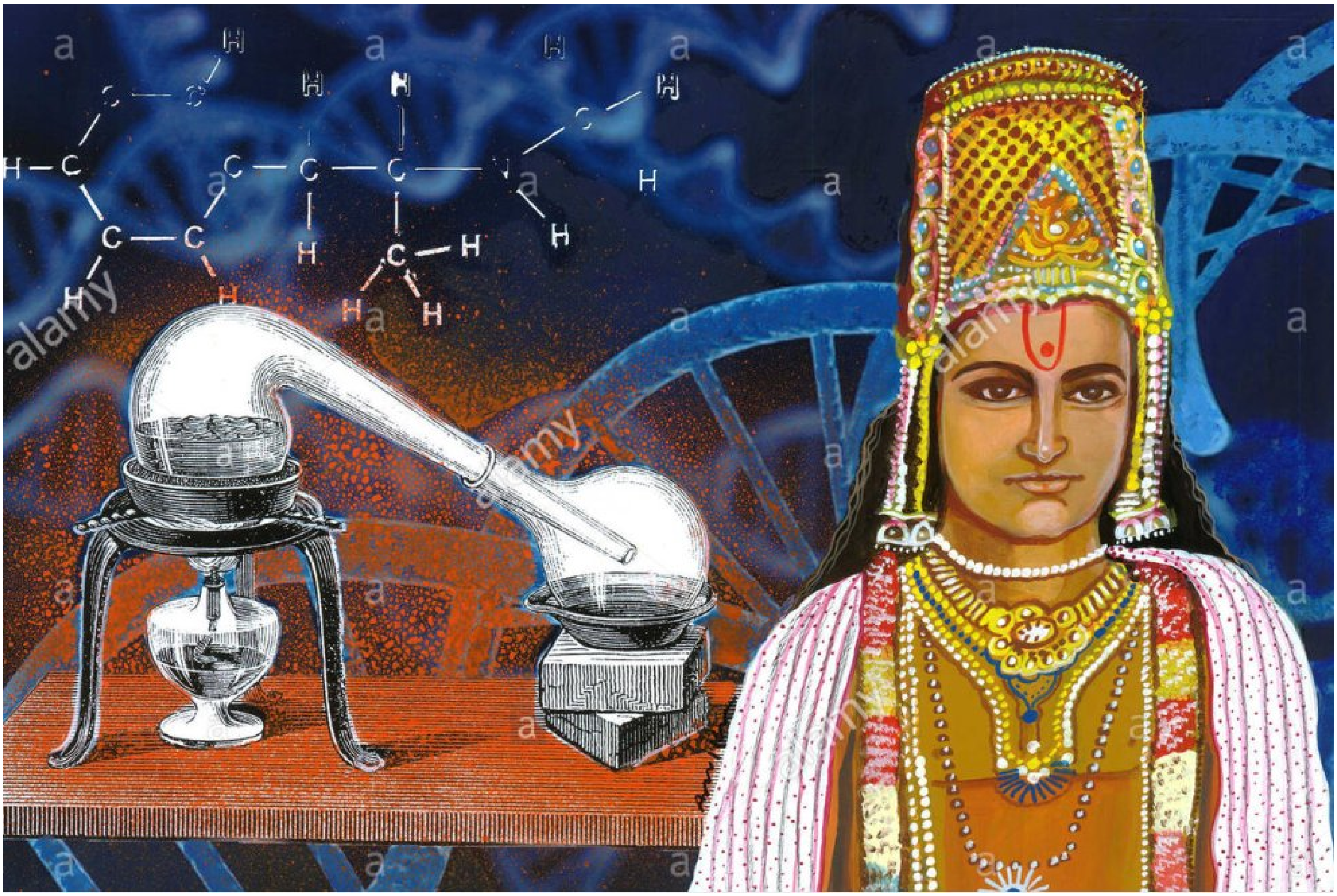

[redacted]

[redacted] ‘[redacted]’ [redacted] ‘[redacted]’ [redacted]

[redacted] ‘[redacted]’, ‘[redacted]’, ‘[redacted]’ [redacted] ‘[redacted]’ [redacted]

3/n

भूतानुकम्पाप्रवणो महेशः श्मशानवासी जगदादिनाथः ।
स्ववीर्य्ययुक्तागदयोगरत्नैः कीर्णानि तन्त्राणि वहूनि चक्रे ॥

अर्थ–सम्पूर्ण सृष्टिके आदिदेव, पितृवनविहारी, परम दयालु, भूतेश्वर, शिवजीने स्वप्रकाशित अनेक तन्त्र और पारदादिक रसग्रन्थ रोगोंके समूहोंको दूर करनेके लिये निर्माण किये ॥

रसग्रन्थेषु तन्त्रेषु धातुशोधनमारणे ।
विवृते च विशेषेण रसराजस्य संस्कृतिः ॥ १ ॥

अर्थ—उन रसग्रन्थोंमें और तन्त्र ग्रन्थोंमें धातुओंका जारण मारण और विशेष करके पारेके संस्कारकी अनेक विधि कही और वह ग्रन्थ वीरभद्रको पढाये । जो जो ग्रन्थ शिवजीने निर्माण किये हैं उन ग्रन्थोंके नाम लिखते हैं—

रसमंगल–महादेव कृत, महारसायन विधि–महादेव कृत,
रसेन्द्रसंहिता–महादेव कृत, रुद्रतन्त्र–महादेव कृत,
रसार्णव–महादेव कृत,

जब इन ग्रन्थोंको वीरभद्रने पढा तो अनेक प्रकारके रस बनाये कि जिनसे संसारके लोगोंका दुःख दूर हो, उनमेंसे कुछ कुछ रसोंके नाम भी लिखते हैं—

अमृतार्णव १, ऐश्वर्य्यभास्कर २, अमृतेश्वर ३, कामेश्वर ४, तांबेश्वर ५, पञ्चानन ६, नीलकण्ठ ७, वज्रेश्वर ८, प्रचण्डभैरव ९, भूतभैरव १०, त्रिनेत्र ११, नागेश्वर १२, वंगेश्वर १३, मृत्युञ्जय १४, उदयभास्कर १५, चन्द्रोदय १६, प्राणेश्वर १७, चन्द्रामृत १८, अग्निकुमार १९, वसन्तकुसुमाकर २०, राजमृगांक २१, महामृगांक २२, कालान्तक २३, लोकेश्वर २४, काकधेनुरस २५, मकरध्वज २६, सर्वांगसुन्दर २७, महालक्ष्मीविलास २८, विजयभैरवरस २९, भूतांकुश ३०, सोमेश्वर ३१, नाराचरस ३२, उड्डाम्बररस ३३, भस्मसूत्र ३४, सूर्य्यावर्त्त ३५, चिन्तामणि ३६, गुञ्जाभद्ररस ३७, हरिशंकररस ३८, पञ्चवक्ररस ३९, पाषाणभेदरस ४०, सूर्योदय ४१, और सर्वतोभद्र ४२, आदिके रसोंका संसारमें प्रचार हुआ और काष्ठादिक औषधियोंकी अपेक्षा रसोंको तत्काल फलदायक समझा, तोलमें भी रसको सौगुणा कम देखा, सहस्रों मनुष्योंको कालके गालसे निकाल लिया, और उनकी यथायोग्य प्रतिपाल की, तब तो रसका आश्चर्यमय प्रभाव देख सब वैद्य इसीको वर्त्तावमें लाने लगे, और काल भी घबराया कि क्या माया है भेद नहीं पाया जाता ? जहां मैं अपना जाल डालता हूं, वहां यह चाण्डाल मेरी दाल नहीं गलने देता, इसका गुण रामबाणकी समान है, बाल वृद्ध

[redacted]

([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]

[redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted])[redacted]
([redacted]) [redacted]

4/n

PURCHASED

॥ श्रीः ॥

सिद्धनित्यनाथप्रणीतः

रसरत्नाकरः ।

(समस्तरसग्रन्थानां शिरोभूषणम्)

माथुरवैश्याऽऽयुर्वेदोद्धारक शालग्रामकृत-
भाषाटीकाविभूषितः ।

स च

क्षेमराज-श्रीकृष्णदास श्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९६६, शाके १८३१.

अस्य सर्वेऽधिकाराः १८६७ तमाब्दिकपञ्चविंश २५ राज-
नियमानुसारेण प्रकाशकाधीनाः ।

[redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]

([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]: [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]

[redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]

[redacted]

5/n

[redacted]

([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]
([redacted]) [redacted]

([illegible]) [illegible]
([illegible]) [illegible]
([illegible]) [illegible]
([illegible]) [illegible]
([illegible]) [illegible]
([illegible]) [illegible]
[illegible]

6/n

[illegible]

[illegible]

7/n

[illegible]-[illegible], [illegible], [illegible]-[illegible]

8/n

[illegible]:[illegible]
[illegible]
[illegible]:[illegible]
[illegible]([illegible]-[illegible]-[illegible]-[illegible]-[illegible])

[illegible] – [illegible]- [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]

9/n

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ([illegible])
[illegible] ([illegible])
[illegible] ([illegible])
[illegible] ([illegible])
[illegible] ([illegible]) [illegible]

10/n

[illegible]-[illegible] ([illegible])
[illegible]: [illegible]:[illegible]
[illegible]:[illegible]

[illegible], [illegible]

11/n

@Dharma_Yoddhaa

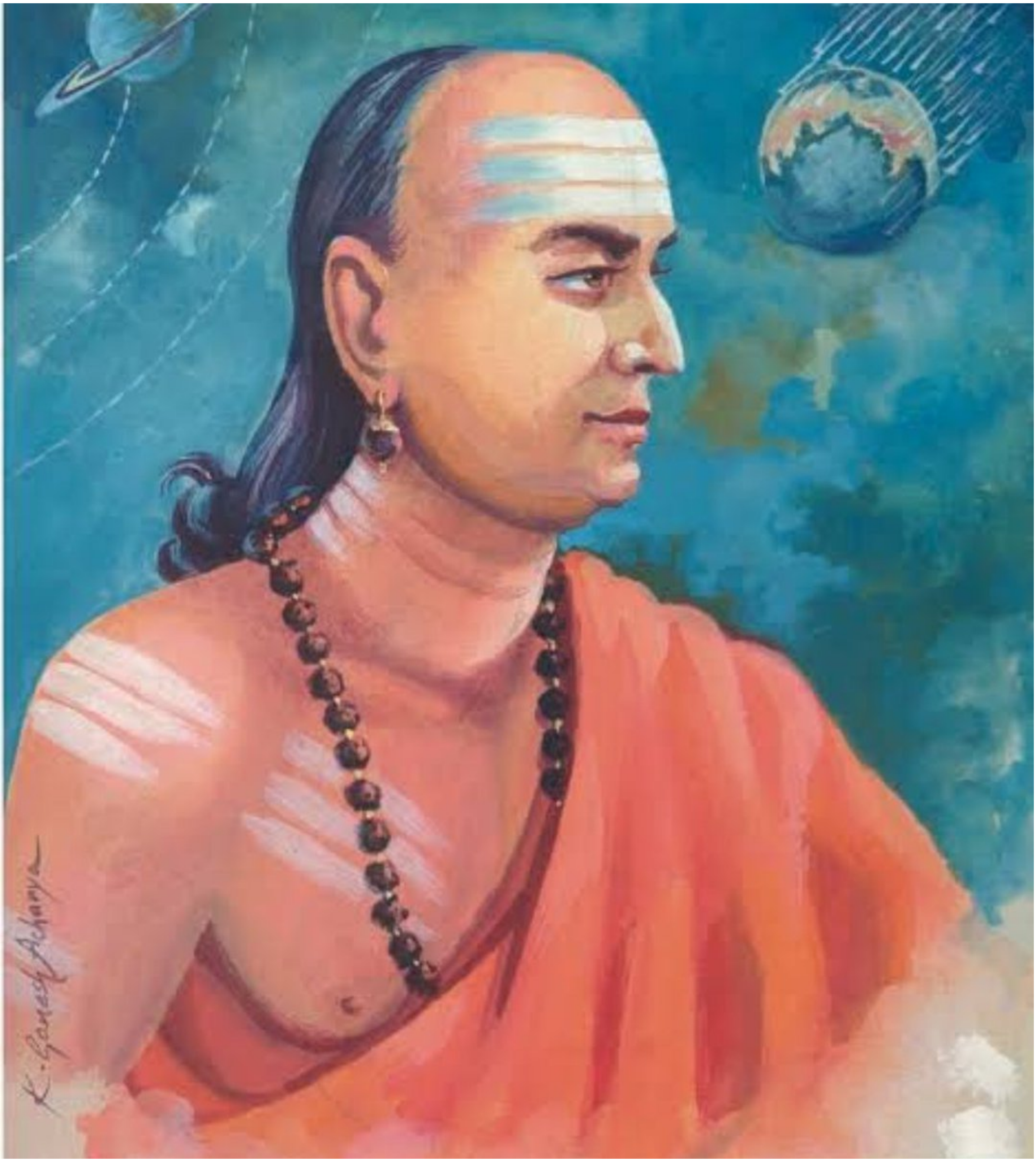

[redacted]

[redacted]. [redacted]
[redacted]. [redacted]
[redacted]. [redacted]
[redacted]. [redacted]
[redacted]. [redacted]
[redacted]. [redacted]
[redacted]. [redacted]
[redacted]. [redacted]
[redacted]. [redacted]

[redacted]

12/n

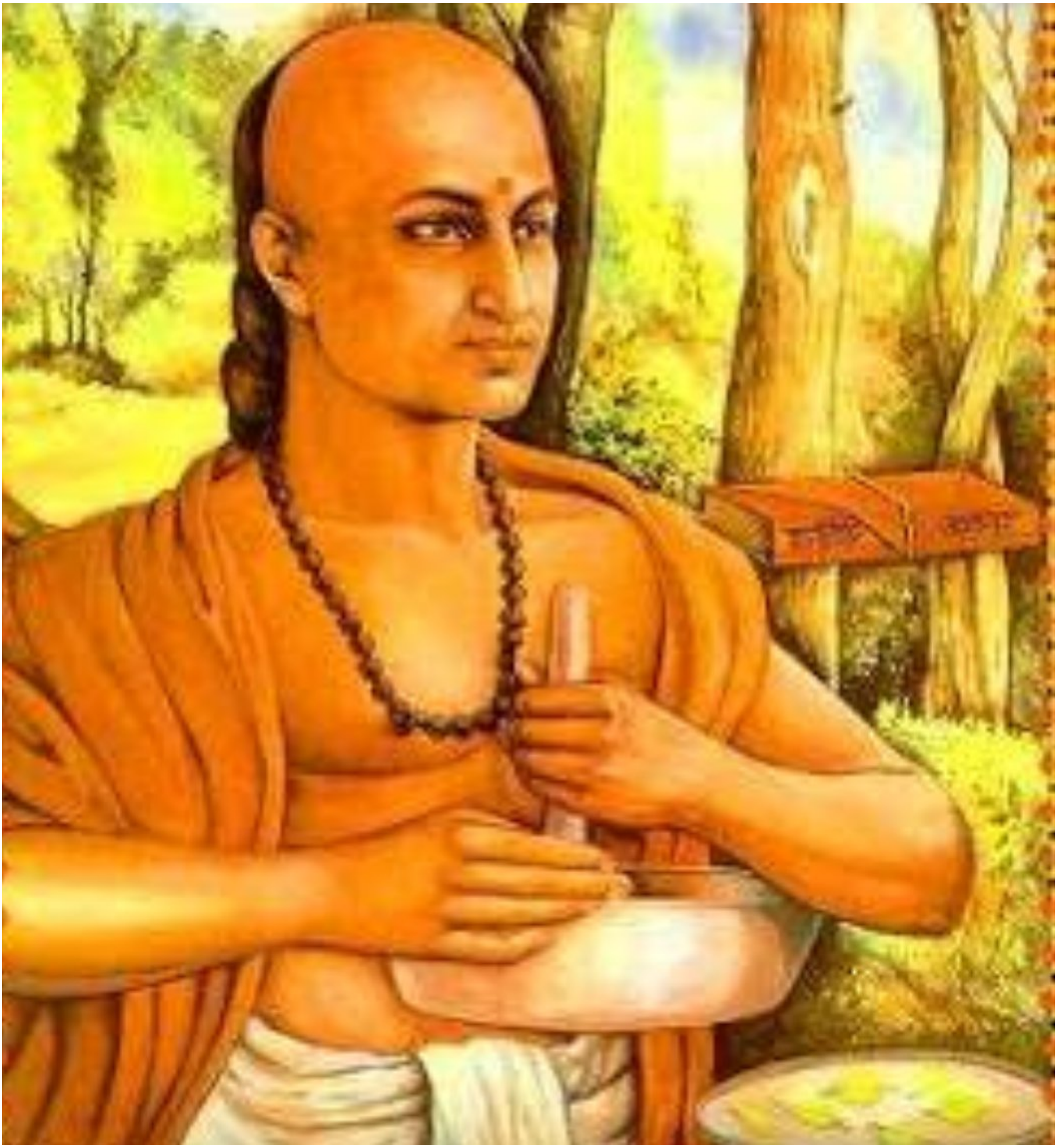

[illegible]

[illegible]

@rightwingchora

@Dharma_Yoddhaa
@dharmicverangna

@vedicvishal @VedicWisdom1 @Vyasonmukh @desidoga @TIinExile